बच्चे : कठपुतली या कर्ता

ऋषभ कुमार मिश्र

कुछ दिनों से अखबारों और टी.वी. चौनलों में बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय प्रदर्शन करते और सड़क पर उतरते दिखाया जा रहा है। हर खबर में स्वीडीश छात्रा ग्रेटा थनबर्ग का नाम आता है और बताया जाता है कि इस किशोरी ने जलवायु परिवर्तन के लिए 'वैश्विक आंदोलन' छेड़ रखा है। इसे 'फ्राइडे फॉर फ्यूचर' आंदोलन का नाम दिया गया है। दुनिया के हर हिस्से के स्कूल और बच्चे इस आंदोलन से जुड़ रहे हैं। भारत के महानगरों से लेकर कस्बाई इलाकों में इस आंदोलन की धूम मच गई है। ऐसी खबरें और प्रदर्शन पढ़ने और देखने में अच्छे लगते हैं। समुदाय को भी संतोष होता है कि 'स्कूल कुछ कर रहा है', उनके बच्चों में भविष्य को लेकर चिंता है। लेकिन इनके बारे में थोड़ा ठहर कर और संभल कर विचार करने की जरूरत है। क्या ऐसे प्रयोजनों में बच्चों की सहभागिता 'बच्चों के बारे में वयस्क द्वारा लिया निर्णय' है या वास्तव में बच्चे खुद विचार कर अपनी सहमति देते हैं? ऐसे एक्टिविज्म के क्या निहितार्थ हैं? इन आंदोलनों की तैयारी और योजना का अंतिम और वृहद लक्ष्य क्या है? प्रदर्शन में भागीदारी के उपरान्त बच्चे और शिक्षक के सामान्य ज्ञान के अलावा अभिवृत्तिगत और व्यवहारगत बदलाव की संभावनाएं क्या हैं? प्रसिद्ध शिक्षाविद रोहित धनकर ने भी अपने ब्लॉग[1] में ग्रेटा थनबर्ग के आंदोलन के बारे में यही सवाल उठाए हैं। इनकी भी यही चिंता है कि कहीं बच्चों की इस तरह की सामाजिक प्रस्तुति उन्हें प्रदर्शन का हथियार बनाना तो नहीं है? ऐसे कई प्रदर्शनों में शामिल बच्चों से बात करने पर उत्तर में 'हां', नहीं और मौन के अलावा रटे-रटाये जुमले जैसे प्रदूषण रोको, वृक्ष लगाओ, पॉलीथीन का प्रयोग बंद करो सुनने को मिले। बच्चों ने कहा कि वे अध्यापकों के कहने पर आए हैं। अध्यापकों ने कहा के वे स्कूल प्रशासन के कहने पर आए। कुल मिलाकर विचार के स्थान पर कहने और मानने का ही चलन था। ऐसी दशा में आंदोलन या प्रदर्शन केवल विद्यालय की 'को-करीकुलर' (?) गतिविधि का हिस्सा मात्र है जहां बच्चों का उपयोग किया जा रहा है जिसमें उनकी स्वीकृति की सत्ता का उपयोग विद्यालय या शिक्षक कर रहा है। वे तो प्रयोगशाला की भेड़ों की तरह बस कहे को मान रहे हैं।

यद्यपि जिस मुद्दे को लेकर यह आंदोलन हो रहा है वह प्रासंगिक है लेकिन बच्चों की भागीदारी के तरीके और निहितार्थ पर सोचने की जरूरत है। आइए बच्चों की सहमति, सक्रियता और सकारात्मक हस्तक्षेप का एक भिन्न उदाहरण देखते हैं। इस वैश्विक आंदोलन से सेवाग्राम के आनंद निकेतन स्कूल के शिक्षक और बच्चे भी परिचित हुए। यह स्कूल गांधी की नई तालीम के सिद्धान्तों पर संचालित है। इन्होंने तय किया कि इस वैश्विक आंदोलन के स्थानीय संस्करण में आनंद निकेतन शामिल होगा। यह निर्णय केवल आंदोलन की सूचना की उपलब्धता स्वरूप प्रतिक्रिया नहीं थी। यह स्कूल पहले से ही स्थानीय पारिस्थितिकी के पर्यावरणीय-सामाजिक -आर्थिक सरोकारों से जुड़ा हुआ है। स्कूल के शिक्षकों और बच्चों ने गत वर्ष ग्रामोद्योगों के उद्धार, स्कूल

1. https://rohitdhankar.com/2019/09/24/should-children-be-used-without-their-informed-agreement/

परिसर में वॉटर हार्वेस्टिंग इत्यादि के लिए प्रयास किया था। स्कूल ने निर्णय लिया कि यदि इस आंदोलन के अगुआ बच्चे हैं तो उन्हें खुद समर्थ बनाने और अपने दृष्टिकोण को विकसित करने व संप्रेषित करने का कार्य करना होगा न कि केवल थोथा प्रदर्शन करने का कार्य। इसलिए बच्चों और शिक्षकों ने पूरे मामले के वैश्विक और स्थानीय परिदृश्य को समझा। बच्चों और शिक्षकों की आम सभा में निर्णय हुआ कि इसके लिए प्रदर्शन किया जा सकता है लेकिन प्रदर्शन में उन्हीं कक्षाओं के बच्चे शामिल हों जो विषय, उसके स्थानीय संदर्भ और प्रदर्शन के औचित्य व तरीके को समझते हैं। यह तय किया गया कि प्रदर्शन में तख्तियों को दिखाने और नारा लगाने के लोकप्रिय रास्तों से बचा जाए। इससे मीडिया कवरेज मिलेगी और इससे अधिक कुछ और नहीं। यह भी निर्णय हुआ कि सड़क की भीड़ को अपनी बात संप्रेषित करने का लाभ नहीं बल्कि आस-पास के स्कूलों के हम उम्र साथियों को इस प्रयास से जोड़ना चाहिए। इस निर्णय प्रक्रिया में 8 वीं से लेकर 10 वीं तक के बच्चे शामिल थे। वे बात को मानने और अनुकरण करने के बजाए अपने मत रखने, रास्ता तलाशने और उससे और लोगों को जोड़ने का उपाय साच रहे थे। स्कूल के बच्चों ने तय किया कि वे अपनी बात एक नाटक के माध्यम से रखेगें। नाटक की विषयवस्तु थी कि 'आप आने वाले पीढ़ी के लिए क्या छोड़कर जाना चाहेगें?' इस सवाल के उत्तर में नाटक के भागीदार बच्चों ने निम्न जवाब दिए- पक्षियों की चहचहाट, वनस्पतियां, शाम की चौपाल (हमारे पूर्वज मिलकर बातचीत करते थे और समस्या का हल खोजते थे। यह तरकीब भविष्य में काम आएगी), किसान (जब किसान नहीं रहेगा तो फसल कौन उगाएगा? जल, जीव और वनस्पति की रक्षा कौन करेगा) कपास, खेत, स्वच्छ समुद्र, हरी सब्जी, चरखा, खनिज तेल, नदी, जंगल, मिट्टी। विद्यार्थियों को इन जवाबों और उनके समर्थन में तर्कों को अपने संवाद के रूप में लिखने और याद रखने को कहा गया। इसके आधार पर एक नाट्य प्रस्तुति तैयार की गई। अगले दिन इन बच्चों ने सेवाग्राम आश्रम में अपनी प्रस्तुति दी।

इस प्रस्तुति की पुनरावृत्ति विद्यार्थियों द्वारा पड़ौस के स्कूलों में भी की गई। आनंद निकेतन का यह उदाहरण बताता है कि प्रकृति और व्यक्ति के रिश्ते को समझने और समझाने जैसे बुनियादी कार्य का दारोमदार बच्चों ने खुद संभाला। यह कार्य अचानक से विस्फोटित नहीं हुआ बल्कि उनके स्कूल और निजी जीवन में व्याप्त दृष्टि का अवसर के अनुकूल प्रस्फुटन था। इसी कारण यह प्रयास तख्ती लेकर सड़क पर उतरने का कर्मकांड नहीं था। बल्कि बच्चों ने अपने स्थानीय कार्यों को वैश्विक संदर्भ में देखा। इसे नियोजित कर दूसरे बच्चों तक संप्रेषित किया। कुल मिलाकर देखा जाए तो यहां के बच्चों ने जो कार्य योजना बनाई वह हो-हल्ला बाजी न होकर वैश्विक समस्या के प्रति स्थानीय प्रतिक्रिया थी। इस प्रतिक्रिया में वे सरकार या राजनेताओं के खिलाफ प्रदर्शन न करके विषय को समझने और इससे संबंधित अपनी भूमिका को लेकर कार्य कर रहे थे। यदि उनके द्वारा किए नाटक को देखें तो इसकी विषयवस्तु बच्चे खुद क्या कर सकते हैं? पर केन्द्रित थी। जब वे पास के विद्यालय गए तो भी वे अपने जैसे बच्चों से अपनी चिंताएं साझा कर रहे थे। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया। वे अपने जैसे अन्य बच्चों को अभिप्रेरित करना चाह रहे थे। वे समाज-प्रकृति और स्वयं के रिश्ते की मनुष्य केन्द्रित धारणाओं से बाहर निकल रहे थे। आनंद निकेतन के इस प्रयास में बच्चे की एजेंसी सर्वप्रमुख थी। वे केवल बड़ों का अनुसरण करने वाले 'बच्चे' नहीं हैं बल्कि मननपूर्वक सामाजिक बदलाव की गुंजाइश को साकार करने वाले वर्तमान नागरिक हैं। आनंद निकेतन का प्रयोग बताता है कि सड़क पर बच्चों की भीड़ लेकर उतरने और दिखावा करने के स्थान पर हमें अपने शिक्षकों और बच्चों को मौका देना चाहिए कि वे पड़ताल करें कि उनके स्थानीय पर्यावरण और समुदाय की दिखने वाली और न दिखनेवाली 'सच्चाइयां' क्या हैं? इन सच्चाइयों के बीच जीवन की कौन सी चुनौतियां हैं? ये चुनौतियां कैसे सामाजिक-आर्थिक स्तर द्वारा निर्देशित हैं? और इसके क्या परिणाम हैं? इन स्थितियों में बदलाव के लिए वे क्या और कैसे कर सकते हैं? यद्यपि उनके करने का पैमाना छोटा होगा लेकिन ये छोटे कदम ही मिलकर बड़ी संभावना को साकार करते हैं? ◆

लेखक परिचय : सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।

संपर्क : 7057392903; rishabhrkm@gmail.com